



शास्त्रीय संगीत के महत्त्व का अध्ययन

Dr. Saloni, Asstt. Professor, Music (Inst) Hindu Girls College, Jagadhri (Ynr)

सार

शास्त्रीय संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल रत्न है। यह संगीत की एक पारंपरिक शैली है जो सदियों से चली आ रही है और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करती है। शास्त्रीय संगीत की रचनात्मकता, जटिलता और भावनात्मक गहराई इसे दुनिया भर में सराहा जाता है। शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलियाँ हैं: हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत उत्तर भारत में विकसित हुआ, जबकि कर्नाटक शास्त्रीय संगीत दक्षिण भारत में विकसित हुआ। दोनों शैलियों में समानताएँ और अंतर हैं, लेकिन दोनों ही संगीत की उच्चतम अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। शास्त्रीय संगीत की रचनात्मकता इसकी राग प्रणाली पर आधारित है। एक राग एक संगीत पैटर्न है जिसमें स्वरों का एक विशिष्ट समूह और उनके बीच संबंध शामिल हैं। राग एक संगीत की रचना के लिए एक ढांचा प्रदान करता है और संगीतकार को भावनाओं और विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला व्यक्त करने की अनुमति देता है। शास्त्रीय संगीत की जटिलता इसकी ताल प्रणाली में भी देखी जा सकती है। ताल एक लयबद्ध पैटर्न है जो संगीत की गति और लय को निर्धारित करता है। शास्त्रीय संगीत में कई जटिल तालें हैं जो संगीतकार को संगीत की गति और लय में विविधता लाने की अनुमति देती हैं। शास्त्रीय संगीत की भावनात्मक गहराई इसकी रचनात्मकता और जटिलता के परिणामस्वरूप है। शास्त्रीय संगीत संगीतकार को भावनाओं और विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला व्यक्त करने की अनुमति देता है। शास्त्रीय संगीत को सुनते समय, श्रोता संगीतकार की भावनाओं और विचारों को महसूस कर सकता है और संगीत के माध्यम से एक गहरे भावनात्मक अनुभव का अनुभव कर सकता है। शास्त्रीय संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल रत्न है। यह संगीत की एक पारंपरिक शैली है जो सदियों से चली आ रही है और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करती है। शास्त्रीय संगीत की रचनात्मकता, जटिलता और भावनात्मक गहराई इसे दुनिया भर में सराहा जाता है।

मुख्य शब्द: शास्त्रीय, संगीत, सांस्कृतिक, विरासत

भूमिका

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल रत्न है। यह संगीत केवल ध्वनि की एक श्रृंखला नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, संस्कृति और इतिहास का एक संगम है। यह संगीत श्रोताओं को एक ऐसी दुनिया में ले जाता है जहाँ वे स्वयं को खो सकते हैं और आनंद ले सकते हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई मानी जाती है। सामवेद में संगीत के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। समय के साथ, इस संगीत ने कई बदलाव किए और विभिन्न शैलियों में विकसित हुआ। मुगल काल में, हिंदुस्तानी संगीत को शाही संरक्षण मिला और यह और अधिक समृद्ध हुआ। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। यह संगीत वेदों और पुराणों में



वर्णित है। मुगल काल में इस संगीत का विकास हुआ और यह मुगल दरबारों में काफी लोकप्रिय हुआ। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का महत्व केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में है। यह संगीत श्रोताओं को शांति और आनंद प्रदान करता है। यह संगीत मन को शांत करता है और तनाव को कम करता है।

आज के समय में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। युवा पीढ़ी पश्चिमी संगीत की ओर आकर्षित हो रही है। इसके अलावा, शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को भी अपनी जीविका चलाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारत की एक अनमोल धरोहर है। हमें इस संगीत को संरक्षित करना और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना चाहिए। हमें युवाओं को शास्त्रीय संगीत के प्रति जागरूक करना चाहिए ताकि वे इस संगीत की सुंदरता को समझ सकें।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशेषताएं

- **राग:** हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की आधारशिला राग है। राग एक संगीत की रचना है जिसमें स्वरों का एक विशिष्ट क्रम और भावना होती है।
- **ताल:** ताल संगीत का लयबद्ध ढांचा है। यह राग को एक संरचित रूप देता है।
- **आलाप:** आलाप राग की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। इसमें गायक राग के विभिन्न स्वरों का प्रयोग करके अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है।
- **ठुमरी:** ठुमरी एक लोकप्रिय शास्त्रीय संगीत की शैली है। यह अपनी मधुर और भावपूर्ण धुनों के लिए जानी जाती है।

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत भारत के दक्षिणी भाग का एक गौरवशाली संगीत रूप है। यह संगीत अपनी जटिल रागों, तालों और भावपूर्ण प्रस्तुति के लिए जाना जाता है। यह सिर्फ संगीत नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का एक अभिन्न अंग है। कर्नाटक संगीत की उत्पत्ति और विकास सदियों से होता रहा है। इसके मूल द्रविड़ संगीत में हैं, जिसे बाद में संस्कृत संगीत सिद्धांतों से समृद्ध किया गया। इस संगीत का स्वर्ण युग 16वीं और 17वीं शताब्दी में देखा गया था, जब संगीतकार जैसे पुरंदर दास, त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षित और श्यामा शास्त्री ने इस शैली को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया।

कर्नाटक संगीत की प्रमुख विशेषताएं

- **राग:** कर्नाटक संगीत में रागों की एक विशाल विविधता है। प्रत्येक राग की अपनी विशिष्ट स्वर संरचना और भावना होती है।
- **ताल:** ताल कर्नाटक संगीत का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह संगीत में लय और गति को नियंत्रित करता है।
- **अलाप:** अलाप राग की भावनाओं को व्यक्त करने का एक अनूठा तरीका है। इसमें स्वरों को मुक्त रूप से गाया जाता है।
- **गायन शैली:** कर्नाटक संगीत में गायन शैली बहुत ही जटिल और भावपूर्ण होती है। इसमें गायक अपनी आवाज को विभिन्न तरीकों से मोड़कर राग की सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करते हैं।



- **वाद्य यंत्र:** वीणा, वायलिन, मृदंगम, घटम और फ्लूट जैसे वाद्य यंत्र कर्नाटक संगीत में प्रयुक्त होते हैं।

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत भारत की एक अमूल्य धरोहर है। यह संगीत अपनी जटिलता, भावना और आध्यात्मिकता के लिए जाना जाता है। कर्नाटक संगीत न केवल भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, बल्कि यह विश्व संगीत की एक अनमोल धरोहर भी है।

शास्त्रीय संगीत के महत्व का अध्ययन

राग, भारतीय संगीत का एक मूलभूत तत्व है जो संगीत की रचना और प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक संगीत पैटर्न या स्वरों का एक समूह है जो एक विशिष्ट भावना, मनोदशा या समय के साथ जुड़ा होता है। रागों का उपयोग विभिन्न प्रकार के भारतीय संगीत में किया जाता है, जैसे कि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कर्नाटक संगीत, भजन, गजल, आदि।

रागों की उत्पत्ति और विकास भारत में प्राचीन काल से ही होता है। वैदिक ग्रंथों जैसे ऋग्वेद में भी रागों के संदर्भ मिलते हैं। समय के साथ, रागों की संख्या और जटिलता बढ़ती गई और विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रागों का विकास हुआ। राग की संरचना में स्वरों का एक विशेष क्रम होता है, जिसे आरोहण (चढ़ाई) और अवरोहण (उतराई) कहा जाता है। स्वरों के साथ-साथ ताल (लय) भी राग की पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रागों में स्वरों के प्रयोग की विधि और ताल के साथ उनके समन्वय के आधार पर राग की भावना और विशेषता निर्धारित होती है।

रागों का संगीत में प्रयोग करने के कई तरीके हैं। एक तरीका है राग पर आधारित रचना करना, जिसमें राग के स्वरों और ताल का उपयोग करके संगीत की रचना की जाती है। दूसरा तरीका है राग पर आधारित तालबद्ध गायन या वादन, जिसमें राग के स्वरों का उपयोग करके तालबद्ध गायन या वादन किया जाता है।

रागों का भारतीय संस्कृति और जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान है। रागों का उपयोग विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सवों में किया जाता है। रागों को सुनने से मन शांत और एकाग्र होता है, और यह मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। निष्कर्षतः, राग भारतीय संगीत का एक अनमोल खजाना है। यह संगीत की रचना और प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। रागों का अध्ययन और अभ्यास संगीत प्रेमियों के लिए एक रोमांचक और ज्ञानवर्धक अनुभव हो सकता है।

भारतीय संगीत का एक अद्वितीय और मनोहारी पहलू है, जिसे आलाप कहते हैं। यह संगीत के एक राग की प्रारंभिक प्रस्तुति है, जिसमें गायक या वादक राग के विभिन्न स्वरों को धीरे-धीरे और भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करते हैं। आलाप का मुख्य उद्देश्य राग की भावना को स्थापित करना और श्रोता को संगीत के गहन अनुभव में ले जाना है।

आलाप की प्रस्तुति में कलाकार राग के स्वरों को विभिन्न गतिविधियों, जैसे कि तान, मोर, और जाति के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। ये गतिविधियाँ राग की जटिलता और उसकी भावनात्मक गहराई को उजागर करती हैं। आलाप की अवधि और शैली कलाकार की पसंद और



राग की विशेषताओं पर निर्भर करती है।

आलाप का महत्व भारतीय संगीत में अत्यधिक है। यह राग की गहराई और उसकी भावनात्मक प्रकृति को दर्शाने का एक माध्यम प्रदान करता है। आलाप के माध्यम से श्रोता राग की जटिलताओं को समझ सकते हैं और उसकी सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा, आलाप संगीतकारों को राग की अनंत संभावनाओं का पता लगाने का अवसर प्रदान करता है। आलाप की प्रस्तुति में कलाकार की संगीत ज्ञान, राग की समझ और भावनात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक अच्छा आलाप कलाकार राग की भावना को श्रोता तक पहुंचाने में सक्षम होता है और संगीत के एक अद्वितीय अनुभव को प्रदान करता है। आलाप भारतीय संगीत का एक अनमोल रत्न है। यह राग की प्रारंभिक प्रस्तुति है, जिसमें कलाकार राग की भावना को स्थापित करते हैं और श्रोता को संगीत की गहराई में ले जाते हैं। आलाप की प्रस्तुति कलाकार की संगीत ज्ञान और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर निर्भर करती है। यह भारतीय संगीत के सौंदर्य और जटिलता को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

ताल, भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण और मूलभूत तत्व है। यह संगीत के लय और गति को नियंत्रित करता है, जिससे संगीत को एक संरचना और आकार मिलता है। ताल की समझ और अनुभव संगीतकार और श्रोता दोनों के लिए आवश्यक है। ताल के विभिन्न प्रकार होते हैं, जैसे कि तेज़ ताल, धीमी ताल, समताल, विषमताल आदि। प्रत्येक ताल का अपना विशिष्ट लय पैटर्न होता है, जो संगीत की भावना और माहौल को निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, एक तेज़ ताल उत्साह और ऊर्जा का भाव पैदा कर सकता है, जबकि एक धीमी ताल शांति और गहराई का अनुभव करा सकती है।

ताल का महत्व न केवल संगीत के लय और गति को नियंत्रित करने में है, बल्कि यह संगीतकारों को एक साथ समन्वय करने में भी मदद करता है। जब संगीतकार एक ही ताल का पालन करते हैं, तो वे संगीत के एक सुसंगत और एकरूपतापूर्ण अनुभव को सुनिश्चित कर सकते हैं। ताल का अध्ययन और अभ्यास संगीतकारों के लिए आवश्यक है। ताल की समझ और अनुभव उन्हें संगीत की रचना, प्रदर्शन और आनंद लेने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, ताल का ज्ञान संगीतकारों को विभिन्न संगीत शैलियों और परंपराओं को समझने और अनुभव करने में भी मदद करता है।

अंत में, ताल भारतीय संगीत का एक अनिवार्य तत्व है। यह संगीत के लय, गति और संरचना को नियंत्रित करता है, संगीतकारों को समन्वय करने में मदद करता है, और संगीत की भावना और माहौल को निर्धारित करता है। ताल का अध्ययन और अभ्यास संगीतकारों के लिए आवश्यक है, ताकि वे संगीत की सुंदरता और गहराई को पूरी तरह से समझ और अनुभव कर सकें।

निष्कर्ष

शास्त्रीय संगीत का भारतीय समाज और संस्कृति में गहरा महत्व है। यह धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक समारोहों और संगीत समारोहों का एक अभिन्न हिस्सा है। कर्नाटक संगीत न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि यह लोगों को एक साथ लाने और उनकी आत्माओं को शांत



करने में भी मदद करता है। आज भी शास्त्रीय संगीत भारत में बहुत लोकप्रिय है। युवा संगीतकार इस शैली को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। कर्नाटक संगीत अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय हो रहा है और इसे दुनिया भर के संगीत प्रेमियों द्वारा सराहा जा रहा है।

संदर्भ

1. ब्राउन एस., मार्टिनेज एम.जे., पार्सन्स एल.एम. निष्क्रिय संगीत सुनने से लिम्बिक और पैरालिम्बिक सिस्टम स्वतः सक्रिय हो जाते हैं। न्यूरोरिपोर्ट। 2020;15(13):2033-2037
2. कार्र सी., ओडेल-मिलर एच., प्रीबे एस. तीव्र वयस्क मनोरोग रोगियों के साथ संगीत चिकित्सा अभ्यास और परिणामों की एक व्यवस्थित समीक्षा। पीएलओएस वन। 2021;8(8)
3. कैस्टलो-पेरेज़ एस., गोमेज़-पेरेज़ वी., वेलास्को एम.सी., पेरेज़-कैंपोस ई., मेयरल एम.-ए. मनोचिकित्सा की तुलना में अवसाद पर संगीत चिकित्सा के प्रभाव। आर्ट्स साइकोथेर। 2020;37(5):387-390
4. चंदा एम.एल., लेविटिन डी.जे. वॉल्यूम। 17. एल्सेवियर लिमिटेड; 2021. संगीत की न्यूरोकेमिस्ट्री; पृ. 179-193. (संज्ञानात्मक विज्ञान में रुझान)
5. चंदा एम.एल., लेविटिन डी.जे. संगीत की न्यूरोकेमिस्ट्री। रुझान संज्ञानात्मक विज्ञान। 2020;17(4):179-193
6. चांग एम., चैन सी., हुआंग के. गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर संगीत चिकित्सा के प्रभाव। जे. क्लिन. नर्स। 2021;17(19):2580-2587
7. चोई ए.-एन., ली एम.एस., लिम एच.-जे. मानसिक रोगियों में अवसाद, चिंता और रिश्तों पर समूह संगीत हस्तक्षेप के प्रभाव: एक पायलट अध्ययन। जे. अल्टरनेटिव कॉम्प. मेड 2020;14(5):567-570
8. क्रूसोस जी.पी. तनाव और तनाव प्रणाली के विकार। नैट. रेव. एंडोक्रिनॉल। 2021;5(7):374. क्लार्क आर., कुपर टी. 2020. पुराना नया से मिलता है: जन्मजात और अनुकूली प्रतिरक्षा के बीच बातचीत